ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 12, Issue 12, December 2022 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

उच्च माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षिक स्थिति का अध्ययन

Gauri kachhap
Research Scholar
Sai Nath University
Munsi Lal Yadav
professor
Sai Nath University

सार

यह प्रमाणित है कि जिस देश में बड़ी संख्या में शिक्षित और कुशल श्रम शक्ति होती है, उसमें दूसरों को आर्थिक विकास में नेतृत्व करने की अधिक क्षमता होती है। इसलिए, यह कहा जा सकता है कि शिक्षा सामान्य रूप से जनसंख्या की और विशेष रूप से श्रम शक्ति की उत्पादकता बढ़ाती है, जिससे व्यक्तिगत आय या मजदूरी में वृद्धि होती है और परिणामस्वरूप, आर्थिक विकास में योगदान होता है। श्रम शक्ति के रूप में माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षित आबादी को विश्वव्यापी बाजार की आवश्यकताओं के अनुसार प्रशिक्षित और समायोजित किया जाता है। माध्यमिक शिक्षा अब राष्ट्रीय उत्पादकता के सभी क्षेत्रों में कामकाजी लोगों का सबसे बड़ा प्रदाता है। यह पेपर देश की माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के विकास पर प्रकाश डालता है और भारत में माध्यमिक शिक्षा प्रणाली से संबंधित वर्तमान समस्याओं और चुनौतियों की जांच करता है। यह पाया गया है कि माध्यमिक शिक्षा और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा में नामांकित छात्रों की कुल संख्या और सकल नामांकन अनुपात इस अवधि में बढ़ती प्रवृत्ति को दर्शाता है। यह पाया गया है कि लैंगिक समानता में सुधार हुआ है, विशेषकर जीपीआई द्वारा दर्शाए गए संबंधित शिक्षा स्तर पर। हालाँकि, शिक्षा के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक क्षेत्र में प्रगति हुई है, प्रगति की दर आवश्यकता की गति के अनुरूप नहीं है।

कीवर्ड: सीखने की शैली, हायर सेकेंडरी स्कूल के छात्र

परिचय

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक विकास का एक अनिवार्य निर्धारक है। किसी देश की शिक्षा की गुणवत्ता उसके मानव संसाधन विकास की गुणवत्ता को दर्शाती है। शिक्षा को न केवल विकासशील देशों बल्कि उन्नत देशों के लिए भी एक राष्ट्र की रीढ़ की हड्डी माना गया है। प्राचार्य शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने और बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण और अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रधानाध्यापकों से शिक्षा की गुणवत्ता, छात्रों के सीखने, छात्रों के स्कोर और निर्देशात्मक परिवर्तनों के कार्यान्वयन में सुधार करने और उन अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए शिक्षकों के लिए एक दृष्टि प्रदान करने की अत्यधिक उम्मीदें हैं। नो चाइल्ड लेफ्ट बिहाइंड एक्ट के भीतर, एक अकादमिक और निर्देशात्मक नेता के रूप में प्राचार्य की भूमिका पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

यह स्वीकार किया जाता है कि शिक्षक और प्राचार्य संपूर्ण शैक्षिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। निस्संदेह शिक्षक और प्राचार्य समाज में बदलाव ला रहे हैं। वर्तमान शताब्दी की चुनौतियों का समाधान किया जा सकता है यदि शिक्षक और प्राचार्य अपने पेशे के प्रति समर्पित हों और नई आधुनिक शिक्षण और प्रशासन तकनीकों से सुसज्जित हों। हाल ही में, प्राचार्य की जिम्मेदारियां अधिक चुनौतीपूर्ण हो गई हैं और इसे केवल शिक्षा की गुणवत्ता के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। यह सच है कि हमारे देश के प्रधानाचार्य व्यवस्था में वांछनीय परिवर्तन लाने के लिए न तो पर्याप्त रूप से सुसज्जित हैं और न ही अधिक प्रेरित हैं। इसका कारण प्रधानाध्यापकों की सेवा पूर्व पेशेवर तैयारी की

कमी और शिक्षा में कम सुविधाएं भी हैं। इसलिए, शिक्षण सीखने की प्रक्रिया की सामग्री, प्रशासन प्रक्रिया में सुधार के लिए शिक्षा में कई सुधार लाने के लिए समय की अत्यधिक आवश्यकता है

भारतीय उपमहाद्वीप में उच्च शिक्षा एक बहुत ही गंभीर व्यवसाय है। पिछले दो दशकों में, भारत में उच्च शिक्षा की क्षमता में तेजी से वृद्धि देखी गई है। 2001 के बाद से उच्च शिक्षा प्राप्ति और नामांकन में लगभग चार गुना वृद्धि हुई है। उच्च शिक्षा में डिग्री, स्नातकोत्तर या डॉक्टरेट स्तर पर शिक्षा प्राप्त करना शामिल है। एक समुदाय के रूप में भारतीय हमेशा अकादमिक खोज में उत्सुक रहे हैं। भारत का सबसे पुराना विश्वविद्यालय, तक्षशिला या तक्षशिला 800 ईसा पूर्व का है। तक्षशिला से जुड़े लगभग 10,500 छात्रों और विद्वानों और लगभग 2000 शिक्षकों के रिकॉर्ड हैं। यहां दर्शनशास्त्र, खगोल विज्ञान, राज्य-शिल्प, कानून, पौधों और जड़ी-बूटियों, दवाओं और सर्जरी जैसे लगभग 68 विषयों के निशान थे। नालंदा विश्वविद्यालय भी दुनिया के प्राचीन विश्वविद्यालयों में से एक है, जो छठी शताब्दी ईसा पूर्व का है। नालंदा बौद्ध परंपराओं का केंद्र और एक मठवासी केंद्र था।

हाई/हायर सेकेंडरी स्कूल में शिक्षा

छत्तीसगढ़, खनिज संसाधन संपन्न राज्यों में से एक और मध्य भारत में एक अपेक्षाकृत नया राज्य है, जिसमें आदिवासी आबादी की उच्च सांद्रता है, जिसे सामाजिक, शैक्षिक और मानव विकास के निम्न स्तर की विशेषता बताई गई है। मानव विकास सूचकांक एचडीआई एक समग्र सूचकांक है जो (1) स्वास्थ्य, (2) शिक्षा, और (3) प्रति व्यक्ति आय को ध्यान में रखता है। 2019 में छत्तीसगढ़ एचडीआई में राष्ट्रीय औसत से नीचे है। राज्य अपने सामाजिक-आर्थिक और शैक्षिक विकास के दूसरे निम्न स्तर का गवाह रहा है, विशेष रूप से 'आकांक्षी जिलों' का बड़ा हिस्सा जहां अनुसूचित जाति और जनजाति का एक बड़ा समूह रहता है। स्कूल तक पहुंच, शिक्षकों की गुणवत्ता और सीखने के परिणामों और बुनियादी सुविधाओं के मामले में राज्य भारत के सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में 21वें स्थान पर है। 2011 की जनगणना के अनुसार, राज्य की कुल साक्षरता दर 70.28% है जो राष्ट्रीय औसत 74.04% से कम है, हालाँकि राज्य ने 2001 में साक्षरता दर 64.66% बढ़ाने में महत्वपूर्ण सुधार किया है, फिर भी, लिंग में असमानता राज्य में साक्षरता आधारित साक्षरता अभी भी चिंताजनक है.

शैक्षिक या शैक्षिक समस्याएँ

भारत में शिक्षा व्यवस्था का दबाव बच्चों पर भारी पड़ रहा है। जो बच्चे बमुश्किल अपनी शैशवावस्था से बाहर निकले हैं, उन्हें किंडरगार्टन में प्रवेश के लिए विभिन्न वस्तुओं की पहचान करने और शिष्टाचार प्रदर्शित करने के लिए कहा जाता है। स्कूल प्राधिकारियों द्वारा माता-पिता की वित्तीय सुरक्षा के प्रति आश्वस्त होने के बाद उनका प्रवेश सुरक्षित कर दिया जाता है। भारत में शिक्षा प्रणाली प्रत्येक सत्र के अंत में आयोजित वार्षिक परीक्षा में बच्चे के प्रदर्शन के आधार पर उसका मूल्यांकन करती है। अच्छे अंक उन बच्चों को दिए जाते हैं जो उत्तर पुस्तिकाओं पर अपने उत्तर शब्दशः लिखने में सक्षम होते हैं। इसलिए, छात्र अपने पाठों को कंठस्थ कर लेते हैं और उन्हें समझने का कोई प्रयास नहीं करते हैं। सैद्धांतिक होने के कारण, शिक्षा ने बच्चों को यांत्रिक बना दिया है क्योंकि वे ज्ञान के व्यावहारिक अनुप्रयोग का प्रयास नहीं करते हैं। कम मेधावी छात्रों के लिए वर्तमान प्रणाली में प्रतिस्पर्धा करना असंभव हो जाता है और वे स्कूल छोड़ देते हैं। कुछ छात्रों को दबाव से निपटने में कठिनाई होती है और वे नशीली दवाओं, शराब, सिगरेट आदि का सहारा लेते हैं। ऐसी आदतें आमतौर पर अपने दोस्तों के कहने पर शुरू की जाती हैं। अच्छे अंक लाने के लिए माता-पिता और साथियों का दबाव बच्चे के समुचित विकास में बाधा डालता है।

अध्ययन के उद्देश्य

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मूल्यों का अध्ययन करना।
उच्च माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षिक स्थिति का अध्ययन
सैवेज और हूनी (2019) के अनुसार, धीमी गति से सीखने वालों को वे लोग कहा जाता है जिनका आईक्यू स्कोर 75-80 के दायरे में आता है। उनकी शैक्षणिक उपलब्धि सीमित सीखने की क्षमता से जुड़ी हुई है। सभी धीमी गति से सीखने वालों में केवल एक ही सामान्य विशेषता होती है, जो औसत बौद्धिक क्षमता से कम होती है, लेकिन व्यवहार में वे दूसरों से बेहतर हो सकते हैं।
रेड्डी और रामर (2023) के अनुसार, कम उपलब्धि वाले वे हैं जिनकी क्षमता इतनी सीमित नहीं है लेकिन फिर भी जिन्हें सीखने में औसत छात्रों की तुलना में अधिक कठिनाई होती है। स्कूल से अनुपस्थिति, दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्तिगत परिस्थितियाँ या अपर्याप्त पर्यावरणीय परिस्थितियाँ अक्सर उनकी प्रगति को और सीमित कर देती हैं। उनकी उपलब्धि उनकी क्षमता के अनुरूप नहीं है बल्कि उपलब्धि के अपेक्षित स्तर से कम है।
आहूजा (2016) ने "शैक्षिक आकांक्षा और शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच आत्म-प्रभावकारिता का एक अध्ययन" शीर्षक से एक अध्ययन में कहा कि लड़कों की तुलना में छात्राओं के पास सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण उच्च शैक्षिक आकांक्षाएं स्कोर थे।
के. कार्तिगेयन और के. निर्मला (2013), अंग्रेजी भाषा सीखने वालों की सीखने की शैली प्राथमिकता। वर्तमान समय सीमा में, छात्र-केंद्रित शैक्षिक सेटिंग में सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक छात्रों का सीखने का दृष्टिकोण है, जो किसी भी भाषा सीखने में व्यक्तियों की बदली हुई सीखने की शैली की प्रवृत्ति में शामिल होता है। सीखने की शैली व्यक्तियों की अंतर्निहित प्रवृत्ति है कि उन्हें सीखने की दिशा में कैसे आगे बढ़ना है और यह प्रचलित कारकों में से एक है जो छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। वर्तमान मूल्यांकन को चलाने वाली प्रेरणा उच्च विवेकाधीन स्कूलों में अंग्रेजी भाषा के छात्रों की प्रमुख सीखने की शैली की प्रवृत्ति को समझना है, जिसमें यौन दिशा, क्षेत्र, शिक्षाप्रद बोर्ड ऑफ ट्रस्टी की प्रकृति और जिस वर्ग पर वे विचार कर रहे हैं, जैसे अनुभाग कारक शामिल हैं।
कॉक्स, डी.ई. एट अल., (2018),सामान्य और शहरी छात्रों के बीच सीखने की शैली का वर्गीकरण। सहायक स्कूल के छात्रों की सीखने की शैली एकल छात्रों और छात्रों के सामाजिक अवसरों के बीच भिन्न होती है। एक सामान्य नियम के रूप में, वर्तमान गृहकक्षों में सीखने में भेदभाव मौजूद है। किसी भी मामले में, परीक्षा हॉल में नीरस और ठोस शिक्षण आचरण के उदाहरण इसी तरह देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ छात्र मौखिक परीक्षाओं से पर्याप्त रूप से जुड़ जाते हैं, जबकि अन्य व्यावहारिक अनुभवों को पसंद करते हैं। फिर भी, अन्य लोग शिक्षक को अपनी स्थिति पर आलस्य से बैठे हुए दिखाई देते हैं। ऐसी नियोजित प्रथाएँ सीखने की प्रमुख शैलियों के लिए विशिष्ट हैं।
सिंह (2014) के अनुसार, धीमी गति से सीखने वाले वे छात्र होते हैं जिन्हें अपने सहपाठियों के साथ तालमेल बिठाने में कठिनाई होती है। धीमी गति से सीखने वाले छात्र मानसिक रूप से मंद नहीं होते हैं, बल्कि सामान्य या नियमित कक्षा के छात्रों की तुलना में धीमी गति से शैक्षणिक सफलता प्राप्त करने में सक्षम होते हैं।

शोध प्रविधि-

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद के शहरी क्षेत्र में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र - छात्राओं को जनसंख्या माना गया है। माध्यमिक विद्यालयों का चयन उद्देश्यपरक विधि से किया गया है तत्पश्चात् उसमें अध्ययनरत् 100 छात्र एवं 100 छात्राओं अर्थात् कुल 200 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत

यादृच्छिक विधि से किया गया है। उपकरण के रूप में के०एस० मिश्र द्वारा निर्मित पारिवारिक वातावरण अनुसूची एवं विद्यार्थियों के कक्षा 10 की परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांक को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में रखा गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रसरण विधि (एनोवा) एवं टी - अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया है ।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या-

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना ।

H1 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

H1माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है

सारणी सं0 1 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण में अन्तर को दर्शाते हुए एफ- अनुपात

स्त्रोत		SS	MS	F	सारणी मान
समूह के मध्य	2	33832.92	16916.46	9.76*	F.05(2,198)= 3.04
समूहों के अंदर	198	343138.20	1733.02		
कुल	200	376971.12	18649.48		

* 05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ- अनुपात का मान 9.76 हैं, जो 05 सार्थकता स्तर पर df =197 पर सारणी मान 3.04 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। इस सार्थक एफ अनुपात के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के उच्च मध्यम एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में भिन्नता है।

सारणी सं० 1माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के अन्तर का टी- अनुपात

	चर	न्यायदर्श	मध्यमान	σD	D	t- मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च	48	404.54	7.96	31.55	3.96	सार्थक
	मध्यम	101	372.99				
2	उच्च	48	404.54	9.13	63.64	6.97	सार्थक
	मध्यम	51	340.90				
3	उच्च	101	372.99	7.80	32.09	4.11	सार्थक
	मध्यम	51	340.90				

सारणी संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के उच्च मध्यम एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के मध्य टी-मान क्रमश: 3.96, 6.97 एवं 4.11 है सार्थक युग्म तुलना से यह स्पष्ट हैं कि उच्च पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की

शैक्षिक उपलब्धि मध्यम एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है जबकि मध्यम पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है। सारणी से स्पष्ट हैं कि उच्च, मध्यम एवं निम्न पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में भिन्नता है ।

परिणामतः कहा जा सकता है कि उच्च, मध्यम एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण पर प्रभाव है अर्थात् उच्च मध्यम एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एक-दूसरे से भिन्न है। आधार पर कहा जा सकता है कि माता-पिता द्वारा अपने बच्चों के साथ स्वच्छंदता एवं स्वतंत्रता की भावना रखनी चाहिए तथा किशोरावस्था के बालक-बालिकाओं के आत्म प्रकटीकरण पर रोक नहीं लगाना चाहिए साथ ही साथ उनके बातों को सुनना चाहिए तथा उनके बातों को गौर करना चाहिए जिससे वे बेझिझक अपने बातों को माता-पिता के साथ कह सकें जिससे उनका व्यक्तित्व विकास एवं संवेगात्मक बुद्धि प्रभावित न हो सकें। माता-पिता को बच्चों के साथ उन सर्जनात्मक गतिविधियों को अधिकाधिक प्रोत्साहन प्रदान करना जिनसे विद्यार्थियों के आन्तरिक व्यक्तित्व का विकास सम्भव हो सके तथा उनमें सामाजिक संवेदनशीलता और मानवीय चेतना से सम्बन्धित शीलगुण में परिवर्तनकामी अभिलक्षण विकसित हो सकें। यह अध्ययन तब अधिक फलदायी होगा जब अन्वेषक द्वारा दिए गए सुझावों को आगे के अध्ययन के लिए लागू किया जाएगा और यह उन लोगों के लिए बहुत मददगार होगा जो इस क्षेत्र में आगे अध्ययन करना चाहते हैं।

संदर्भ

अबिओला, जे. (2014), "ओन्डो राज्य, नाइजीरिया के ओन्डो पश्चिम स्थानीय सरकारी क्षेत्र में महिला माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की व्यावसायिक पसंद पर शैक्षिक आकांक्षाओं का प्रभाव", यूरोपीय वैज्ञानिक जर्नल, खंड 1, पीपी. 224- 233.

आहूजा, ए. (2016), "शैक्षिक आकांक्षा और शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच आत्म-प्रभावकारिता का एक अध्ययन", शैक्षिक खोज: एक इंट। शिक्षा और अनुप्रयुक्त सामाजिक विज्ञान के जे., वॉल्यूम। 7 , क्रमांक 3 , पृ. 27-283.

सैवेज और हूनी (2019) "सामाजिक आर्थिक स्थिति और स्कूली शिक्षा", डीईईटी/एसीईआर, कैनबरा।

आहूजा (2016) "किशोरों की व्यावसायिक और शैक्षिक आकांक्षाएं और अपेक्षाएं: हाई स्कूल गतिविधियों और वयस्क शैक्षिक प्राप्ति के लिंक", विकासात्मक मनोविज्ञान, खंड 46, नंबर 1, पीपी 258-65।

रेड्डी और रामर (2023) "आय और अंतरपीढ़ीगत गतिशीलता के वितरण का एक संतुलन सिद्धांत।" जर्नल ऑफ़ पॉलिटिकल इकोनॉमी, वॉल्यूम। 87, पीपी.1153-1189

के. कार्तिगेयन और के. निर्मला (2013), "ए गुड एनफ पेरेंट: ए बुक ऑन चाइल्ड रियरिंग", न्यूयॉर्क: अल्फ्रेड ए. नॉफ, इंक., पीपी. 55-69।

बोहोन, ए.एस., एम. किर्कपैट्रिक जॉनसन और के.बी. गोर्मन (2006), "संयुक्त राज्य अमेरिका में लैटिनो किशोरों के बीच कॉलेज आकांक्षाएं और उम्मीदें", सामाजिक समस्याएं, वॉल्यूम। 53, संख्या 2,

पृ. 207-25।
कॉक्स, डी.ई. एट अल., (2018),"आकांक्षा के स्तर के हालिया अध्ययन", मनोवैज्ञानिक बुलेटिन, वॉल्यूम। 38, पृ.218-225.
सिंह (2014) "आकांक्षाएं और अवसर संरचना: प्रतिबंधित अवसरों वाले क्षेत्रों में 13-वर्षीय बच्चे", ब्रिटिश जर्नल ऑफ गाइडेंस एंड काउंसलिंग, वॉल्यूम 23, पीपी 361-375।
जॉर्ज, जे. (2014), "उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक आकांक्षा: कुछ जनसांख्यिकीय चर पर आधारित एक तुलनात्मक अध्ययन", द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल स्टडीज, वॉल्यूम। 2, क्रमांक 1, पृ.78-81.
गोयल, एस.पी. (2004), "शैक्षणिक आकांक्षाओं पर लिंग, घर और पर्यावरण का प्रभाव", जर्नल ऑफ कम्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च, खंड 21, नंबर 1, पीपी. 77- 81.
गॉटफ्रेडसन, एल.एस. (2002), "गॉटफ्रेडसन की परिधि, समझौता और आत्मसृजन का सिद्धांत", कैरियर विकल्प और विकास, खंड 4, पीपी.85-148
हार्ट, एल. (2014), "छात्र उपलब्धि पर सामाजिक आर्थिक स्थिति का प्रभाव" . http://everydaylife.globalpost.com/effect-socionomic-status-student-achievement16898.html पर उपलब्ध है
हरलॉक (1973), "किशोर विकास", अंतर्राष्ट्रीय छात्र संस्करण, मैकग्रा हिल लोगाकुशु लिमिटेड
कालिया, ए.के. और साहू, एस. (2012), "सामाजिक-आर्थिक स्थिति पैमाना", राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक निगम, आगरा